THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

बी. एड. के ग्रामीण और शहरी छात्रों की साइबर अपराध जागरूकता का अध्ययन

प्रो॰ शुभ्रा चतुर्वेदी
प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग,
जे.वी. जैन कॉलेज सहारनपुर

राजकुमार
शोधकर्ता, एम. एड. (2024-26),
जे.वी. जैन कॉलेज सहारनपुर

सारांश :– ***इस अध्ययन का उद्देश्य बी.एड.के ग्रामीण और शहरी छात्रों के साइबर अपराध जागरूकता का पता लगाना है ।इस कारण से, प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए, बी.एड. के 100 छात्रों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।***

मुख्य शब्द :– *साइबर अपराध जागरूकता,बी.एड. छात्र, छात्राएं, ग्रामीण, शहरी , सरकारी सहायता प्राप्त,निजी महाविद्यालय।*

प्रस्तावना

आधुनिक समय में हर क्षेत्र में तकनीक का प्रयोग हर क्षेत्र में लगातार बढ़ता जा रहा है। तकनीक मनुष्य को जैसे-जैसे सहायता प्रदान कर रही है वैसे ही वह मनुष्य की आवश्यकता भी बन गई है। इसलिए मनुष्य तकनीक पर और भी ज्यादा निर्भर होता जा रहा है। व्यक्ति ऑनलाइन कार्य करके समय और लागत की बचत करता है। व्यक्ति अपने महत्वपूर्ण डाटा को भी ऑनलाइन सुरक्षित रखते हैं जैसे गूगल ड्राइव , ईमेल या रेडिफमेल इत्यादि में। आजकल व्यक्ति मुद्रा लेनदेन का कार्य भीऑनलाइन कर रहा है जैसे– नेट बैंकिंग, यूपीआई ,क्रेडिट कार्ड ,डेबिट कार्ड,एटीएम इत्यादि। इसी प्रकार शिक्षा में भी तकनीक का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ रहा है। ऑनलाइन शिक्षा पद्धति लगातार बढ़ती जा रही है और हमारा देश **डिजिटल इंडिया** प्रोग्राम के तहत शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया के सबसे तेजी से उभरने वाले देशों में शामिल हो चुका है। डिजिटलीकरण के बढ़ते प्रभाव से आज भारत में शिक्षा का प्रसार डिजिटल माध्यम से बड़ी मात्रा में किया जा रहा है जैसे– **नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया, निष्ठा एप, एनसीईआरटी, एससीईआरटी, शोधगंगा, अनअकैडमी, आकाश, खान जीएस अकादमी** आदि। भारत

सरकार ने स्वयं, दीक्षा और ई पाठशाला जैसे प्लेटफार्म शुरू किए हैं जिसे लाखों छात्र डिजिटल माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। **UNESCO (2024) के अनुसार**, भारत के लगभग **65%** विद्यार्थी किसी ने किसी डिजिटल माध्यम से जुड़ चुके हैं ग्रामीण क्षेत्रों में भी मोबाइल इंटरनेट से पहुंच बढ़ी है। इलेक्ट्रॉनिक्स और **सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय(2024) के अनुसार**, आज भारत विश्व में तीसरा सबसे बड़ा इंटरनेट उपयोगकर्ता देश है जिसके चलते साइबर अपराध का दायरा भी बढ़ा है जैसे – हैकिंग, वायरस ,फिशिंग ,डेटा लीक, ऑनलाइन उत्पीड़न, क्रेडिट कार्ड डेबिट कार्ड फ्रॉड, बैंकिंग फ्रॉड, पहचान चोरी, क्यूआर कोड स्कैम, डार्क वेब मार्केट प्लेस, अनाधिकृत पहुंच,इत्यादि इन सब के प्रति जागरूक होना अति आवश्यक है जागरूकता के अभाव में व्यक्ति इनका शिकार हो जाता है।**राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोंटिंग पोर्टल के अनुसार–**साइबर अपराध जागरूकता कर्मचारीयों और नागरिकों को साइबर स्पेस में छिपे हुए खतरों और जिम्मेदारी से कार्य करने के बारे में शिक्षित करने की एक सतत प्रक्रिया है।

केरल उच्च साक्षरता दर और मजबूत सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली के कारण डिजिटल साक्षरता में अग्रणी राज्य है। मिजोरम उच्च साक्षरता दर के चलते डिजिटल शिक्षा में महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त करने वाला राज्य बन चुका है। गोवा भी उच्च साक्षरता दर और डिजिटल शिक्षा में अग्रणी राज्यों में शामिल है। दिल्ली में सभी सरकारी स्कूलों में कंप्यूटर व इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है जिसका डिजिटल शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान है। इन सभी के साथ भारत में यूट्यूब पर बहुत बड़ी मात्रा में शिक्षण सामग्री उपलब्ध है तथा अन्य बहुसंख्य प्लेटफॉर्म्स पर भी शिक्षा निशुल्क व शुल्क सहित दोनों रूपों में उपलब्ध है। डिजिटल माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या को ध्यान में रखते हुए यह अति आवश्यक हो जाता है कि जो वर्तमान में शिक्षक हैं या भविष्य में शिक्षक बनेंगे उन्हें इंटरनेट का सुरक्षित प्रयोग करना आना चाहिए। इसलिए बी.एड.कर रहे छात्रों के लिए साइबर सुरक्षा और उसके प्रति जागरूकता बेहद जरूरी है।

अध्ययन की तर्कसंगतता और महत्व:– बी. एड. के छात्रों की साइबर अपराध जागरूकता का अध्ययन वर्तमान समय की अत्यंत आवश्यक और प्रासंगिक शोध दिशा है क्योंकि भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, एनसीईआरटी, एससीईआरटी, डाइट, और राष्ट्रीय शिक्षा

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

नीति 2020 यह सभी शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल साक्षरता, साइबर सुरक्षा तथा सुरक्षित ऑनलाइन व्यवहार को शिक्षकों और विद्यार्थियों में विकसित करने पर निरंतर बल दे रहे हैं । **एनसीईआरटी** और **शिक्षा मंत्रालय** दोनों ही **सेफ डिजिटल इंडिया इनीशिएटिव** के अंतर्गत यह सुझाव देते हैं कि शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में डिजिटल साक्षरता माड्यूल को अनिवार्य बनाया जाए ताकि भविष्य के शिक्षक स्वयं सुरक्षित इंटरनेट उपयोग के आदर्श बने। इन सब के अलावा डिजिटल साक्षरता और साइबर जागरूकता आधुनिक समय में बेहद जरूरी है क्योंकि आज के समय में लगभग हर क्षेत्र में कंप्यूटर और इंटरनेट का प्रयोग होता है सुरक्षित ऑनलाइन व्यवहार के लिए साइबर अपराध जागरुकता जरूरी है।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

समद्दर, कमालिका(2024) ने भारत में महिलाओं और बच्चों के खिलाफ साइबर अपराध के बदलते आयाम: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन के पश्चात निष्कर्ष निकाला कि महिलाओं-बच्चों के विरुद्ध साइबर अपराध बढ़ते तकनीकी विस्तार का परिणाम हैं, जिनसे निपटने हेतु सशक्त कानून, डिजिटल साक्षरता, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और प्रभावी प्रवर्तन अनिवार्य हैं।

चतुर्वेदी, नीरजा (2023) ने साइबर अपराध के प्रति जागरूक दिल्ली की महिलाओं का अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष निकाला कि दिल्ली की महिलाएँ इंटरनेट खूब उपयोग करती हैं, पर साइबर सुरक्षा और कानूनों की जानकारी कम है। इसलिए जागरूकता, प्रशिक्षण और कानूनी सहायता देकर महिलाओं को सुरक्षित डिजिटल उपयोग हेतु सशक्त बनाना आवश्यक है।

भावे, शोभा सुरेश(2022) ने बैंकिंग क्षेत्र में साइबर अपराध: ग्राहकों की धारणा और प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला की इंटरनेट बैंकिंग लेन-देन की संख्या और मूल्य बढ़ने के साथ साइबर अपराध भी बढ़े हैं। ग्राहक जागरूकता को प्रभावी मानते हैं और बैंक अधिकारियों से व्यक्तिगत प्रशिक्षण चाहते हैं। जिससे वें इंटरनेट बैंकिंग का सुरक्षित उपयोग कर सके।

मुथुकुमार एम.(2022) ने तमिलनाडु में पुरुष और महिला सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं के बीच साइबर कानूनों और साइबर अपराधों के बारे में जागरूकता पर एक तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात बताया किसाइबर अपराध जागरूकता बढ़ रही है, फिर भी महिलाएँ अधिक प्रभावित हैं। प्रशिक्षण से सुरक्षा आदतें सुधरी हैं, इसलिए महिलाओं के लिए साइबर कानूनों की जानकारी और सतर्कता विशेष रूप से आवश्यक है।

गर्ग शालिनी(2021) ने हरियाणा राज्य के सरकारी और निजी कॉलेज के छात्रों के बीच लिंग और क्षेत्र के संबंध में साइबर अपराध जागरूकता का एक अध्ययन करने की पश्चात निष्कर्ष निकाला कि शहरी, निजी और पुरुष कॉलेज छात्र साइबर अपराधों के प्रति अधिक जागरूक हैं, जबकि ग्रामीण, सरकारी और महिला छात्रों में जागरूकता बढ़ाने प्रयास आवश्यक हैं।

शोध के उद्देश्य

- बी.एड.के ग्रामीण और शहरी छात्रों के मध्य साइबर अपराध जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बी.एड.की ग्रामीण और शहरी छात्राओं के मध्य साइबर अपराध जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बी.एड.के ग्रामीण और शहरी छात्रों (सरकारी सहायता प्राप्त महाविद्यालय के सभी छात्रों)के मध्य साइबर अपराध जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बी.एड.के ग्रामीण और शहरी छात्रों (निजी महाविद्यालय के सभी छात्रों) के मध्य साइबर अपराध जागरूकता तुलनात्मक अध्ययन करना

शोध की परिकल्पना

- बी.एड. के ग्रामीण और शहरी छात्रों के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
- बी.एड. की ग्रामीण और शहरी छात्राओं के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
- बी.एड.के ग्रामीण और शहरी छात्रों (सरकारी सहायता प्राप्त महाविद्यालय के सभी छात्रों) के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

- बी.एड. ग्रामीण और शहरी छात्रों (निजी महाविद्यालय के सभी छात्रों) के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध का क्षेत्र व परिसीमन

इस अनुसंधान में केवल सहारनपुर जिले के महाविद्यालयो के छात्रों को ही सम्मिलित किया गया है

इस अनुसंधान में केवल एक ही उपकरण (**साइबर अपराध जागरूकता- डॉ. एस राजशेखर**) का प्रयोग किया गया है।

विधि

चर:

स्वतंत्र चर - लिंग, ग्रामीण व शहरी परिवेश

आश्रित चर - साइबर अपराध जागरूकता

अनुसंधान अभिकल्प

वर्तमान अनुसंधान के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अनुसंधान उपकरण

वर्तमान अनुसंधान में शोधकर्ता द्वारा डॉ. एस राजशेखर द्वारा निर्मित साइबर अपराध जागरूकता स्केल का प्रयोग किया गया है

न्यादर्श

इस अनुसंधान में केवल 100 छात्र-छात्राओं को ही चयनित किया गया है। न्यादर्श सहारनपुर के दो महाविद्यालयों से लिया गया है

जे वी जैन डिग्री कॉलेज, सहारनपुर

एच आई टी कॉलेज,नकुड़

न्यादर्श तकनीक

इस अनुसंधान में सरल याद्रच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण

इस अध्ययन में बी. एड.के ग्रामीण और शहरी छात्रों की साइबर अपराध जागरूकता का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है जिसमें माध्य, मानक विचलन और टी-परीक्षण का

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

प्रयोग किया गया है। जब 36 पुरुष छात्रों(20 ग्रामीण और 16 शहरी) के प्रदत्तो का विश्लेषण किया गया तब t=0.97 प्राप्त हुआ अतः शून्य परिकल्पना (बी.एड के ग्रामीण और शहरी पुरुष छात्रों के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।) स्वीकृत की जाती है। जब 64 महिला छात्रों (28 ग्रामीण और 36 शहरी) के प्रदत्तो का विश्लेषण किया गया तब t=1.63 प्राप्त हुआ अतः शून्य परिकल्पना (बी.एड. की ग्रामीण और शहरी महिला छात्रों के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।) जब सरकारी सहायता प्राप्त महाविद्यालय (जे. वी. जैन सहारनपुर) के 36 छात्रों (पुरुष व महिला दोनों जिनमें से13 ग्रामीण और 23 शहरी हैं) के प्रदत्तो का विश्लेषण किया गया तब t=1.02 प्राप्त हुआ अतः शून्य परिकल्पना (सरकारी सहायता प्राप्त महाविद्यालय के ग्रामीण और शहरी छात्रों के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।) स्वीकार की जाती है। जब निजी महाविद्यालय (एच. आई. टी. नकुड) के 64 छात्रों (पुरुष व महिला दोनों जिनमें से 35 ग्रामीण और 29 शहरी हैं) के प्रदत्तो का विश्लेषण किया गया तब t=0.83 प्राप्त हुआ अतः शून्य परिकल्पना (निजी महाविद्यालय के ग्रामीण और शहरी छात्रों के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।) स्वीकार की जाती है।

तालिका 1. बी. एड. के ग्रामीण और शहरी छात्रों के मध्य साइबर अपराध जागरूकता के लिए टी मान की गणना

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	स्वतंत्रता का अंश	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	20	143.15	13.25	0.97	34	0.05 व0.01 पर असार्थक
शहरी	16	138.50	15.13			

सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 पर टी-मान

उपरोक्त तालिका संख्या 01 में गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.97 है, जो सारणी में दिए गए 0.05 स्तर के टी मान 2.03 तथा 0.01 स्तर के टी मान 2.72 से कम है। अतः

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

शून्य परिकल्पना (बी.एड.के ग्रामीण और शहरी छात्रों के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।) स्वीकार की जाती है।

तालिका 2. बी.एड. कि ग्रामीण और शहरी छात्राओं के मध्य साइबर अपराध जागरूकता के लिए टी मान गणना

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	स्वतंत्रता का अंश	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	28	137.14	10.77	1.63	62	0.05 व0.01 पर असार्थक
शहरी	36	143.31	19.12			

सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 पर टी-मान

उपरोक्त तालिका संख्या 02 में गणना द्वारा प्राप्त टी मान 1.63 है, जो सारणी में दिए गए 0.05 स्तर के टी मान 2.00 तथा 0.01 स्तर के टी मान 2.66 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना (बी.एड.की ग्रामीण और शहरी छात्राओं के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।) स्वीकार की जाती है

तालिका 3. बी.एड.के ग्रामीण और शहरी छात्रों (सरकारी सहायता प्राप्त महाविद्यालय के सभी छात्रों) के मध्य साइबर अपराध जागरूकता के लिए टी मान की गणना

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	स्वतंत्रता का अंश	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	13	146	13.30	1.02	34	0.05 व0.01 पर असार्थक
शहरी	23	151.52	18.97			

सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 पर टी-मान

उपरोक्त तालिका संख्या 03 में गणना द्वारा प्राप्त टी मान 1.02 है, जो सारणी में दिए गए 0.05 स्तर के टी मान 3.03 तथा 0.01 स्तर के टी मान 2.72 से कम है अतः शून्य परिकल्पना {बी.एड.के ग्रामीण और शहरी छात्रों (सरकारी सहायता प्राप्त

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

महाविद्यालय के सभी छात्रों) के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है। } स्वीकार की जातीहै।

तालिका 4. बी.एड. ग्रामीण और शहरी छात्रों (निजी महाविद्यालय के सभी छात्रों) के मध्य साइबर अपराध जागरूकता के लिए टी मान की गणना

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	स्वतंत्रता का अंश	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	35	137.29	11.31	0.83	62	0.05 व0.01 पर असार्थक
शहरी	29	134.44	15.06			

सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 पर टी-मान

उपरोक्त तालिका संख्या 04 में गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.83 है, जो सारणी में दिए गए 0.05 स्तर के टी मान 2.00 तथा 0.01 स्तर के टी मान 2.66 से कम है अतः शून्य परिकल्पना {बी.एड. ग्रामीण और शहरी छात्रों (निजी महाविद्यालय के सभी छात्रों) के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।} स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष

1. बी.एड.के ग्रामीण और शहरी छात्रों के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. बी.एड. कि ग्रामीण और शहरी छात्राओं के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में कोई अंतर नहीं है।
3. सरकारी सहायता प्राप्त महाविद्यालय के ग्रामीण और शहरी छात्रों में साइबर अपराध जागरूकता में कोई अंतर नहीं है।
4. निजी महाविद्यालय के ग्रामीण और शहरी छात्रों के मध्य साइबर अपराध जागरूकता में कोई अंतर नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ

यह अध्ययन साइबर अपराध जागरूकता के महत्व को समझने में मदद करेगा। शिक्षा तकनीकी के क्षेत्र में डिजिटल उपकरणों के बढ़ते प्रयोग से डिजिटल साक्षरता अति

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

आवश्यक हो गई है जिसके लिए यह अध्ययन एक मार्गदर्शन का कार्य करेगा। भविष्य में सरकार और शिक्षण संस्थाएं डिजिटल योजनाएं बनाएंगे तब उन्हें लागू करने के लिए किस स्तर पर कार्य करना चाहिए इस प्रकार के अध्ययन एक अहम भूमिका निभाएंगे। इसके साथ ही जो भविष्य के शिक्षक होंगे उन्हें डिजिटल प्रशिक्षण किस स्तर पर चाहिए होगा उसका एक उचित और सटीक अनुमान लगाना इस प्रकार के अध्ययनों के कारण आसान हो जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अनंथुला, आर. और सरसानी, एम. आर. (2017)। कंप्यूटर ज्ञान परीक्षण। आगरा: राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम।
- बेयल्स, डब्ल्यू. जे. (2001)। "कंप्यूटर नेटवर्क हमले की नैतिकता"। पैरामीटर्स, (स्प्रिंग), 44-58।
- बेकर, जे. (1980)। "भविष्य का कंप्यूटर अपराध कैरियर?" कंप्यूटर करियर पत्रिका, अक्टूबर।
- बिशप, एम. (2006)। "सूचना सुरक्षा में शिक्षण संदर्भ"। कंप्यूटिंग में शैक्षिक संसाधनों के एसीएम जर्नल, 6(3)।
- एडवर्ड्स, एल. एलन, (1957)। दृष्टिकोण पैमाने निर्माण की तकनीकें।, वकील फेफर और सिमंस (पी) लिमिटेड, बॉम्बे।
- हाउसहोल्डर, ए., हौले, के. और डौघर्टी, सी. (2002)। "कंप्यूटर हमले की प्रवृत्तियाँ इंटरनेट सुरक्षा को चुनौती देती हैं"। सुरक्षा और गोपनीयता (कंप्यूटर), 35(4), 5-7।
- हुड्डा, एम. और त्यागी, ए. (2017)। फेसबुक उपयोग पैमाना। आगरा: राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम।
- सैनी, एस. और कौर, पी. (2017)। इंटरनेट उपयोग पैमाना। आगरा: राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम।
- सरकार, एस. और दास, पी. (2017)। इंटरनेट और सोशल नेटवर्किंग साइट्स एटीट्यूड स्केल। आगरा: राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम।
- विजयश्री और अंसारी, एम. (2021)। स्मार्ट फोन एडिक्शन स्केल। आगरा: राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम।